OM-1- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 15/03/2021 11:30 AM Page 10

सोच की सुरक्षा...

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आज सुरक्षा के मायनों में कितने ऐसे मायने हैं जो अलग-अलग तरह से समाज को इंगित करते हैं। उदाहरण के लिए जैसे आज सभी चाहते हैं कि हमारे घर में सबकुछ बहुत अच्छा चले उसके लिए समय-समय पर, अलग-अलग अवसर पर कुछ न कुछ ऐसे दानपुण्य करते हैं ताकि उसका लाभ सुरक्षा के रूप में हमारे घर को मिले। ऐसी बातों से हम अपने आप को सुरक्षित रखें।

इसके अलावा ज्योतिष, वास्तु और बहुत से ऐसे विज्ञान का उपयोग भी हम करते हैं जो स्थूल रूप में अपने परिवार को स्थूलता के साथ सुरक्षित करते हैं। होना भी चाहिए स्वाभाविक-सी बात है, ज़रूरी है। लेकिन समय बदल रहा है, और इस बदलाव के दौर में आप एक बार नज़र उठाकर देखेंगे तो ऐसे बहुत सारे पहलू और पल नज़र आयेंगे जिसमें हर कोई कर्म तो कर रहा लेकिन डर भी रहा है। और डर इतना समय का, इतना लम्बा है कि उससे निकलने के कई हज़ार तरीके अपनाता है, लेकिन फिर भी किसी न किसी बात में उसे डर लगता ही है। तो ऐसे व्यक्ति का ये सबकुछ करना, समय प्रति समय अपने आपको उन दायरों में ले जाना जो ज़रूरी नहीं है,उसमें जाकर बात करना वो कहाँ तक कामयाब होता है।

फिर बात आती है कुछ लोग सक्षम भी हैं, कुछ लोग असक्षम भी हैं। कुछ लोग ये सारी चीज़ें कर सकते हैं लेकिन कुछ हैं जो कुछ बिल्कुल भी नहीं कर सकते तो फिर उनकी सुरक्षा कैसे? करने वाले असुरक्षित हैं क्योंकि उनके अन्दर ताकत नहीं है। और-और चीज़ें करके उनसे मन भर लेते हैं लेकिन जो दायरे से बिल्कुल ही कटे हुए हैं और जिनके अन्दर बिल्कुल भी दम नहीं है और वो कैसे करेंगे! तो उनके पास एक शक्ति है वो है सोच की शक्ति। क्योंकि सोच में हमारे दान है, सोच में ही पुण्य है, सोच में ही सबकुछ है जो समाज ने हमारे में डाली हुई हैं।

अगर सोच को मूल्यों से, मापदंडों से, सत्यता से, ईमानदारी से भर लिया जाये तो क्या आपको नहीं लगता कि हम सत्यता के आधार से सुरक्षित हो जायेंगे! तो सोच ही हमारा एक ऐसा पहलू है, सोच ही एक ऐसा मुद्दा है हमारे लिए जो हर पल आपको स्थाई रूप से या अस्थाई रूप से सुख देता है। जैसे एक बार हँसी की बात कर लो तो सुख मिल गया, एक बार खुशी की बात कर लो सुख मिल गया। तो सुख कौन दे रहा है? सोच। एक छोटी-सी सोच सुन्दर वातावरण बनाने के लिए कह रही है। एक छोटी-सी सोच एक सुन्दर बात समझने के लिए कह रही है। एक छोटी-सी सोच आपको उन बातों से निकालने में मदद करती है जिन बातों ने आपको उलझाये रखा है।

तो आप सोचिए, दान में बल है, वास्तु में बल है, ज्योतिष में बल है या फिर सोच में बल है? हमारी सोच सुरक्षित कब रहेगी और सही रूप से सोच हम कब पायेंगे? जब हम मूल्यों, नैतिकता और सत्यता के मापदंडों पर चलेंगे तो मूल्यों मापदंडों, सत्यता या गुणों के आधार से की गई सोच ही सुरक्षित है। क्योंकि और-और चीज़ों में कुछ न कुछ मिलावट है। और वो उन लोगों ने बनाया है जो इस समाज में हैं। लेकिन उनको ये सारी बातें पता ही नहीं है कि आध्यात्मिकता में बल है। और आध्यात्मिकता से हम अपने आपको ज़्यादा सुरक्षित महसूस कर सकते हैं, न कि और चीज़ें करने से। तो सबसे पहले अपनी सोच को इन बातों से सुरक्षित करना बहुत ज़रूरी है। क्योंकि जब हम आध्यात्मिक बन भी जाते हैं तो भी ये बीच-बीच में सारी बातें हमारी सोच को डिस्टर्ब करती हैं, परेशान करती हैं। और हम न चाहते हुए भी उन सारी चीज़ों को करने लग जाते हैं कि चलो नहीं-नहीं क्या फर्क पड़ता है। ज्ञानी हो गए तो भी क्या इन सब बातों को करना ज़रूरी है? बिल्कुल ज़रूरी नहीं है क्योंकि उसमें भी सोच थोड़ी देर तो चलेगी ना! अगर थोड़ी देर भी सोच चलती है तो आप अपने साथ न्याय नहीं कर रहे हैं और मिक्सड होना, ये संकल्प भी हो, वो संकल्प भी हो तो सोच हमेशा फ्लक्चुएट होगी। और आप वो नहीं कर पायेंगे जो करना चाहते हैं। तो एक फिक्स्ड आइडिया के साथ कि नहीं संकल्पों में सिर्फ आध्यात्मिकता को डालना है। आध्यात्मिकता के साथ सोचना है, आध्यात्मिकता के साथ बोलना है। नैतिकता, गुण और शक्ति के आधार से ही जीवन जीना है। आप देखो आप निरंतर सुरक्षित रहेंगे, प्रकृति भी आपको सहयोग देगी, लोग भी आपको सहयोग देंगे। और समाज का एक-एक तबक़ा आपकी सराहना करेगा। तो अगर सच में अपने आपको सुरक्षित करना है तो अपनी सोच को सुरक्षित करिए क्योंकि यही सबसे महत्वपूर्ण पहलू है हमारे जीवन का। सोच की सुरक्षा जब हो जाये तो समझो हमारा आगे का सम्पूर्ण जीवन निष्कलंक, सौभाग्यशाली और सुखमय बन जायेगा। फिर सभी आप की सोच से चलने लगेंगे।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

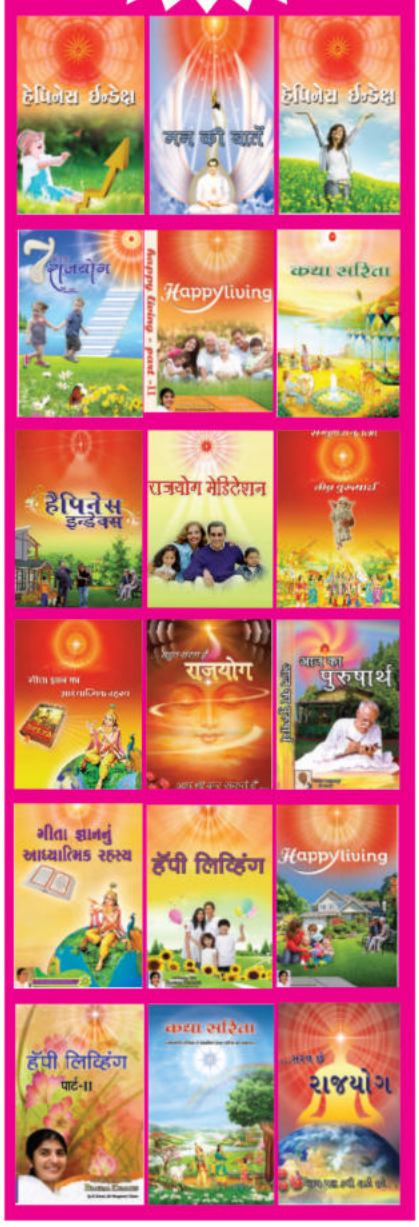

प्रश्न : मेरा नाम पूर्वी है। मैं 21 साल की हूँ। मुझे झूठ बोलने की बहुत आदत हो गई है। कोई भी सिचुएशन हो, मैं सही भी हूँ तो भी मेरे मुख से झूठ ही निकलता है। मैं इससे छुटकारा पाना चाहती हूँ कृपया बतायें कि मैं इससे कैसे मुक्त हो सकती हूँ?

उत्तर : ये बहुत अच्छा है कि आप अपनी गलती को महसूस कर रही हैं। आप सत्य के मार्ग पर आना चाहती हैं ये बहुत अच्छी बात है। क्योंकि संसार में झूठ का बोल बाला है परन्तु विजय सत्य की है। झूठ से टेंशन बढ़ रही है, झूठ से पाप बढ़ रहा है। झूठ से अविश्वास बढ़ रहा है। तो इससे तो मनुष्य को मुक्त होना ही चाहिए। अभी आपको इससे बचने के लिए अपने मन में दृढ़ता लानी होगी कि नहीं मुझे अब सत्य के मार्ग पर चलना है। तो मैं आत्मा हूँ इस सत्य से शुरुआत करेंगे। मैं ये शरीर हूँ ये झूठ हो गया। मैं चेतन आत्मा हूँ, अजर अमर अविनाशी हूँ। आत्मा भी सत्य है। तो इस स्वरूप में स्थित होने से सत्य के संस्कार जागृत होते जायेंगे। और बहुत थोड़े समय में मैं तो कहूँगा कि तीन मास आप ये अभ्यास कर लें। स्वमान की प्रैक्टिस हमें महान बनाती है। मैं एक महान आत्मा हूँ, मैं एक पुण्य आत्मा हूँ, मैं धर्मात्मा हूँ, श्रेष्ठ हूँ, पवित्र आत्मा हूँ। इस तरह की फीलिंग में आप रहेंगी तो सत्य नैचुरल रूप से आपके साथ आ जायेगा। और वो आपकी शक्ति बन जायेगा। और दूसरा अगर झूठ बोलने के बाद हम अपनी गलती को रियलाइज़ कर लेते हैं और क्षमा मांग लेते हैं तो इससे भी आप जल्दी निकल जायेंगी।

प्रश्न : मेरा नाम कार्तिक है। मेरी समस्या ये है कि अच्छे से पढ़ने के बावजूद भी मैं 12वीं क्लास क्लीयर नहीं कर पा रहा हूँ। इस बार लास्ट चांस है, बस अकाउंट रह जाता है। माँ जी कहती हैं कि तेरी कुंडली में पढ़ाई नहीं है। क्या कुंडली सच होती है? कृपया बतायें मैं ऐसी स्थिति में क्या करूँ?

उत्तर : आप रोज़ सवेरे उठते ही बहुत विश्वास के साथ सात बार संकल्प करेंगे मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। और जब एग्ज़ाम देने जा रहे हों तब भी 2-3 बार ये दोहरायें और जब पेपर लिखने लगें तो भी एक बार इस स्वमान की प्रैक्टिस ज़रूर करें। बिल्कुल भी नर्वस नहीं होना है आपको, डर बिल्कुल छोड़ दें। इस बार पता नहीं क्या होगा। अगर इस बार भी फेल हो गए तो गये। तो इसीलिए आपको ऐसा नहीं सोचना है। आप ऐसा सोचें कि इस बार मेरा एग्ज़ाम बिल्कुल क्लीयर होगा, शिवबाबा मेरे साथ है। और साथ में जब तक एग्ज़ाम आयें एक घंटा रोज़ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है इस स्वमान के साथ मेडिटेशन अवश्य करें। इससे बाधा भी दूर हो जायेगी और सफलता भी मिलेगी। और शिवबाबा आपको ज़रूर सफलता प्रदान करेंगे। और रही बात कुंडली की तो आपको कुंडली को

मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

मानकर बैठ नहीं जाना है। सबकुछ बदलता है। क्योंकि कर्मों के आधार से सबकुछ होता है। अगर आप कर्मों को महान बना लें और अच्छा योगाभ्यास करें तो पास्ट के कार्मिक अकाउंट क्लीयर होने लगेंगे। आपके ये सब इफेक्ट खत्म हो जायेंगे। वो ग्रह रहेगा तो वहीं लेकिन जो भारी था वो धीमा हो जायेगा और कार्य में बाधा नहीं डालेगा।

प्रश्न : मेरा नाम डॉ. महेश है। परमात्मा मुरली में ये कहते हैं कि अंतिम समय में पांचों विकार के रूप होंगे बाकी विकार तो हम समझ सकते हैं लेकिन ये जो मोह है उसको कैसे समझा जाये? कहते हैं कि मोह अपने अति रूप में होगा। आज हम देख रहे हैं कि परिवार टूट रहे है, अटैचमेंट खत्म हो रहे हैं तो इस चीज़ को कैसे समझा जाये?

उत्तर : भगवान ने तो अपने महावाक्यों में ये कह दिया है कि ये अन्तिम पेपर नष्टोमोहा का ही होगा। ये मोह अति सूक्ष्म है। इसको पहचानना इतना सहज काम नहीं है। मुझे भी पचास साल पहले पता चला किसी ने बताया कि आपके अन्दर मोह है। मैंने कहा कि मेरे अन्दर मोह! मुझे दुनिया से लगाव नहीं, मुझे सम्बन्धियों से लगाव नहीं। मेरे अन्दर मोह कहाँ से आया! तो उसने कहा कि नहीं, मोह है। और ये बहुत साल के बाद मुझे रियलाइज़ेशन हुआ कि मोह कितनी सूक्ष्म चीज़ है। कोई व्यक्ति हमारे साथ दस साल से रह रहा है हमें उससे प्यार है। भले ही वो प्यार निगेटिव नहीं है, साथ खाते हैं, साथ घूमने जाते हैं, साथ चर्चायें करते हैं, साथ योगाभ्यास करते हैं। लेकिन एक थोड़ा-सा लगाव अवश्य रहता है। वो व्यक्ति जब हमसे दूर रहता है, 10-20 दिन हमारे साथ न हो तो हमें एक मिसिंग फील अवश्य होती है। अब मोह वस्तुओं में भी हो सकता है और साधनों में भी। अपनी योग्यताओं से भी लगाव हो सकता है। मनुष्यों से भी लगाव हो सकता है। इसको पहचानना भी सूक्ष्म स्थिति है। और इससे दूर होने के लिए देह से डिटैच यानी सॉल कॉन्सेस होने की लम्बे समय तक प्रैक्टिस करनी चाहिए।

तो अन्त में ये ऐसा पेपर आयेगा कि जिस व्यक्ति का जिस वस्तु या व्यक्ति में मोह है वो उसको पकड़ लेगा अंत में। वो मनुष्य को एक डिप्रेशन की स्थिति में ले जायेगा। ये मोह का एक स्वरूप होता है। इसमें एक अच्छे पुरुषार्थ की आवश्यकता है। ये जो घर टूटने की, परिवार टूटने की बात कही इसके पीछे मनुष्य का इगो काम कर रहा है। छोटी-छोटी बातों के कारण लोग अलग होने को तैयार हैं। लेकिन जो मोह है वो तो उनके अन्दर ही है। मतलब ये नहीं कह सकते कि अलग हो रहे हैं तो मोह खत्म हो गया।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल